आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत
विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 01 | उदयपुर सोमवार 15 जनवरी 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

तथ्य और सत्य की कसौटी पर रानी पद्मिनी

– देवकिशन राजपुरोहित –

इन दिनों पद्मिनी पर हर कोई कलम तोड़ रहा है। सभी का आधार पद्मावत है जिसे मलिक मोहम्मद जायसी ने लिखा। पद्मावत का उल्लेख करने वालों ने कभी पद्मावत को नहीं पढ़ा। उसी को आधार मान कर लोग पद्मिनी को कपोल कल्पना करते हैं फिर पद्मिनी, गोरा–बादल चरित्र पद्मावत में जायसी कहाँ से लाया? स्वयं जायसी ने पद्मावत कथा का आधार वेन कवि को माना है। पद्मावत की रचना 1597 में की गई।

चित्तौड़ के राजसिंहासन पर पूर्व में रावल और बाद में महाराणा पदाधिकारी रहे। रावल रतनसिंह छत्तीसवें शासक थे जो अपने पिता समरसिंह के उत्तराधिकारी बने। यह वह समय था जब दिल्ली में अलाऊद्दीन खिलजी अपने चाचा की नृशंस हत्या कर शासक बना।

रतनसिंह युवराज थे तभी उनके अनेक विवाह हो चुके थे। उनकी पटराणी प्रभावती थी। जब वे रावल पद पर आसीन हुए तब उन्होंने पद्मिनी के साथ विवाह किया। एक बार प्रभावती जब रतनसिंह को भोजन करा रही थी तब भोजन में किसी चूक के कारण रतनसिंह ने उलाहना दिया। इस पर प्रभावती ने कहा कि फिर तो पद्मिनी को ही ले आओ। इस पर रतनसिंह ने प्रतिज्ञा की कि वह पद्मिनी को लाकर ही रहेगा। उस समय पद्मिनी की प्रसिद्धि पूरे क्षेत्र में थी। पद्मिनी पूगल राज्य के शासक पनपाल पंवार की पुत्री अनिंद्य सुन्दरी थी। पद्मिनी पर लिखने वालों ने उसे पूगल का स्वीकार नहीं किया है। सिंहलद्वीप (सिलोन) लंका की राजकुमारी माना जो स्वीकार्य नहीं है। लोग पद्मिनी को सिंघोली की भी मानते हैं। संभव है पद्मिनी के सिंघोली का होने के कारण जायसी ने सिंहलद्वीप मान लिया हो।

उन दिनों चित्तौड़ में अनेक कलाकार–संगीतकार थे। उनमें एक राघव चेतन संगीतज्ञ और तांत्रिक था। रतनसिंह को पता चला कि वह तंत्र क्रिया करता है अत: उससे रूष्ट हो देश निकाला दे दिया। खिलजी विषय–लोलुप, मदान्ध, धर्म ध्वंसक, हत्यारा और कट्टर होने के साथ–साथ साम्राज्य के विस्तार के लिए हिन्दू शासकों को अपने अधीन करता जा रहा था। इसी अवधि में राघव चेतन ने उसे भड़काया और पद्मिनी के रूप–लावण्य की चर्चा की जिसने आग में घी का काम किया। खिलजी असंख्य सेना के साथ चित्तौड़ पहुंच गया किन्तु जीत पाना मुश्किल मान एक कूट–नीतिक चाल द्वारा रतनसिंह को संदेश भेजा कि वह पद्मिनी को अपनी बहन की भांति देखना चाहता है।

राजपुरोहितजी शब्द रंजन कार्यालय में डॉ. भानावत से चर्चा करते।

निश्चय किया कि कुण्ड के पानी में पद्मिनी की परछाई दिखा दी जाएगी मगर सेनापति गोरा और बादल ने इसका विरोध कर चित्तौड़ त्याग दिया। खिलजी शाही अतिथि की भांति किले में आया। उसका खूब स्वागत किया गया। साथ बैठकर भोजन किया। झरोखे से कुण्ड के पानी में रानी का चेहरा दिखाया गया। शिष्टाचारवश किले की अंतिम पोल तक रतनसिंह विदा करने गया जहां खिलजी के इशारे पर उसके सैनिकों ने उसे कैद कर संदेश भेजा कि रतनसिंह को जीवित चाहते हो तो पद्मिनी को हमारे हवाले कर दो।

रतनसिंह की पटरानी प्रभावती के पुत्र वीरभाण ने पद्मिनी को खिलजी को देकर रावल के प्राण बचाए जाने का उपाय बताया। पद्मिनी दुविधा में थी कि गोरा–बादल के बिना इस संकट का सामना कौन करे? उसने गोरा–बादल को खोज निकाला। गोरा–बादल चाचा भतीजा चौहान थे। उन्होंने वीरभाण को अपने पक्ष में किया फिर सात सौ परमवीरों और तीन हजार लड़ाकों को तैयार कर एक योजना बनाई। पद्मिनी की तरफ से संदेश भेजा कि वह अपनी सात सौ सहेलियों के साथ पालकियों में आ रही है। खिलजी खुश हो गया।

पालकियों में महान वीरों को बिठाया। प्रत्येक पालकी को चार–चार कहार योद्धा लेकर खिलजी के डेरे की ओर चले। संदेश भेजा गया कि रानी अपने पति से मिलना चाहती है। खिलजी ने खुश होकर पालकी के पास रतनसिंह को भेजा किन्तु पालकी में पद्मिनी के स्थान पर गोरा बैठा था। सभी पालकियों से योद्धा और कहार के रूप में पहुंचे वीर दुश्मनों पर बुरी तरह झपटते रहे जिससे खिलजी के होश उड़ गए। रतनसिंह सकुशल किले में प्रवेश कर गए और किले के सभी द्वार बन्द कर दिए गए।

किले से बाहर तीन हजार मेवाड़ी सूरमा काल भैरव बनकर खिलजी की सेना पर टूट पड़े और पच्चीस हजार सैनिकों को धराशायी करते हुए खेत रहे। खिलजी ने चारों ओर से किले की घेरा बंदी कर दी। पद्मिनी के साथ किले में छत्तीस कौम की स्त्रियों ने जौहर कुण्ड में अपने को अग्नि समर्पित कर दिया जिनकी संख्या सोलह हजार थी। किले के द्वार खोल दिए गए। रतनसिंह वीरगति को प्राप्त हुए।

इतिहासकार राज्याश्रित होते थे। जिसका इतिहास लिखते उसकी कमजोरियों और कमियों को कभी नहीं लिखते थे। अमीर खुसरो ने जो इस युद्ध का प्रत्यक्षदर्शी था, अपने इतिहास तारीखे–अलाई और खजाइन–उल–फुतुह में जानबूझ कर पद्मिनी प्रसंग नहीं लिखा किन्तु वह यह जरूर लिखता है कि खिलजी बड़ी उमंग के साथ किले में 'हुद हुद' कहते हुए दाखिल हुआ। खुसरो ने तो खिलजी की अन्य लम्पटता एवं एय्याशियों का भी उल्लेख नहीं किया। हमीर की पत्नी और पुत्री के लिए जब खिलजी ने रणथम्भौर पर हमला किया उसके पूर्व ही उसकी पत्नी और पुत्री ने जौहर कर लिया। उसने देवगिरी के शासक यादव रामचन्द्र की पुत्री छिताई तथा गुजरात के शासक करण की रानी कमला और उसकी पुत्री देवल का भी सतीत्व नष्ट किया। यह अलग बात है कि जैन कवियों ने छिताई वार्ता में उसका दुश्चरित्र उजागर किया। उसमें पद्मिनी प्रसंग भी लिखा गया है।

पद्मिनी को फिल्मों में नचाने वालों को केवल एक बात पर गौर करना है कि जौहर करने वाली कभी नाचती नहीं और नाचने–गाने व मुजरा करने वाली कभी जौहर नहीं करती। पद्मावत के रचनाकार मलिक मोहम्मद जायसी ने तो खिलजी को समलिंगी भी बताया है। सुन्दर बच्चे उसकी वासना का शिकार होते थे। उन्हें मलिक काफूर खरीद कर लाता था जो बाद में खिलजी का सलाहकार बन गया था।

स्मृतियों के शिखर (44) : डॉ. महेन्द्र भानावत

मांड गायकी की गर्वोक्ति गवरीदेवी

जोधपुर की मांड गायिका गवरीदेवी से कई बार मिलना हुआ। जोधपुर में उनके घर पर और जयपुर, कोटा, बीकानेर, उदयपुर जैसे कई समारोहों में उनसे भेंट हुई। लोककला मंडल के समारोह में भी उन्हें आमंत्रित किया जाता रहा। संगीत के प्रशिक्षण शिविरों में भी उनसे भेंट होती रही। उनकी बुलंद गायकी श्रोताओं पर जादू सा असर करती थी। लोग झूमते थे और वन्स मोर की झड़ियां लगाते रहते थे।

स्वभाव से गवरीदेवी शान्त प्रकृति की थी पर बड़ी ठसक वाली थी। लगता था जैसे अपनी गायकी का पूरा घराना ही वह अपने साथ लिये चल रही है। राजघरानों की संगीत महफिलों की बात चलती तो गवरी देवी का चेहरा मुस्कान से भर जाता।

कहतीं- उनका ठाठ ही और था। तब सुनने वाले भी बड़े समझू और कद्रदान होते थे। वे गाने में न केवल रस लेते थे, उसके मर्म को भी समझते थे और बड़ी इज्जत देते थे। गायक भी अपना सबकुछ उड़ेल देते थे। तबीयत खोलकर गाते थे। ऐसी विशिष्ट महफिलों के लिए गीत भी वैसे ही होते थे। गायकी भी कई लहजों में, कई स्वरों में बड़ी ऊंचाई लिए चलती थी। सामान्य लोगों में तो सबकुछ साधारण ही चलता।

इसीलिए म्हारी घूमर छै नखराळी, जला रे म्हैं तो राज रा डेरा निरखण आई तथा केसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देस जैस गीत राजघराने में ही शोभते थे। बाकी तो सब देहाती गाते थे। मांड गाने का असली मजा ही राजदरबार में आता। सुनने वाले झूम उठते। बड़ी पक्की समझ थी उनकी। अब वैसी समझ नहीं। अब तो केवल ताली और वाह वाह, क्या खूब, वन्स मोर रह गये हैं। इससे लगता है कि लोग कुछ भी समझ नहीं रहे हैं, मात्र तालियों के साथ झूम रहे हैं। ऐसी झूमाझूमी तब नहीं होती थी।

गायकी की विशेषताओं में गवरीदेवी का कहना था कि मांड ठुमरी और विलंबत होती है। विलंबत छोटे ख्याल जैसी हो जाती है। चौताला झूमरा में भी मांड होती है परन्तु प्राय: कहरवा में ही मांड गाई जाती है। यह मांड शास्त्रीय संगीत जैसी पकीपकाई होती है इसलिए इसे हर कोई नहीं गा सकता। इसका दूहा ऊंचा उठाना पड़ता है। इसीलिए इसका एक विशेष पैटर्न होता है। इसमें तोड़ामारी जैसी बात नहीं चलती। मांड इसीलिए दरबारी गायकी के रूप में शोभा पाती है। यह कोई घरबारी गायकी नहीं कि इसे जहां चाहो घर-घर में गाते चलो।

राजा-महाराजाओं ने इस गायकी का खूब आनंद लिया पर प्रचार उन्होंने भी नहीं किया। साधारण जनता को इससे दूर ही रखा तो यह लोकप्रिय भी नहीं हुई। दरबार-दरबार में ही यह घूमती रही। इसीलिए इसका किसी ने शास्त्र भी नहीं बनाया। जब शास्त्र नहीं बना तो यह शास्त्रीय संगीत भी नहीं बन पाई और लोकसंगीत में भी अपना वजूद नहीं दे पाई। दरबारी गायकी में मूमल-

काळी काळी काजलिया
री रेख सा
काळी तो बादल में चमकै
बीजळी
ढोला री मूमल हाले तो ले
चालूं मुरधर देश
राणा -म्हारा रतन राणा एकर
तो अमराणै घोड़ो फेर
जलो - जला रे म्हैं तो राज रा
डेरा निरखण आई
केसरिया बालम - केसरिया
बालम आवोनी पधारो म्हारे देस,
टीडू - अभियौ गाजै टीडू
धरती धूजै रे)

जैसे गीतों की गूंज थी। गानेवाले के साथ सारंगिये होते। ढोलक चलती। तबला और बाजा भी चलता। फरमाइश पर फरमाइश चलती। फरमाइश तो आज भी चलती है पर मांड को नहीं समझने वाले अधिक होते हैं। इससे यह तो कहा ही जा सकता है कि मांड आकर्षक गायकी तो है ही। इसी से प्रभावित होकर एच एम वी ने गवरीदेवी की छह रिकार्डें भरी।

गवरीदेवी का यह सौभाग्य रहा कि राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने भी उन्हें सुना और पूरे मन से सराहना की और अपने हाथों से प्रशंसा पत्र भी प्रदान किया। मांड के गहरे प्रभाव का ही यह परिणाम रहा कि बड़े-बड़े गवैयों ने भी इसे अपनाया। उन्होंने इसमें अन्य राग-गायकी का मिश्रण किया और नाम ही मिश्र मांड कर दिया। मिश्र मांड रविशंकर और अली अकबर खां ने भी अपनाई। कभी किसी ने गणगौर और केसरिया बालम को मिलाया तो कभी किसी दूसरी मांड गायकी को स्वरबद्ध किया। जनता ने भी बड़े चाव से सुना। सुना ही नहीं, उसके साथ-साथ अपना स्वर भी मिलाया मगर उनकी चलन और आलाप में तो फर्क होना स्वाभाविक है। हमारा गाना अपने ढंग का परम्परागत है और फिर गला भी सबका एक जैसा नहीं होता। कई बार गवरीबाई और अल्लाजिलाई बाई को एक साथ मंच पर गाना पड़ा परन्तु बीकानेर और जोधपुर की बोली में भिन्नता होने से दोनों ही गायिकाएं वह रस और ठसक नहीं दे पाती थीं जिसे वे अपने निजी रूप में गायकी द्वारा प्रभाव छोड़ती थीं। हां, स्थायी पर आकर वे श्रोताओं को अवश्य आनंदित किये रहतीं। गवरीदेवी ने उस्तादों की मार खा-खाकर कभी संगीत नहीं सीखा। घर में परम्परा थी सो गाने वाले गाते। गवरीदेवी तो सुनती ही सुनती लेकिन तेरह वर्ष की उम्र में उनका विवाह कर दिया। ससुराल सम्पन्न मिला। जागीर वाला होने से उन्हें गाने का मौका वहां भी नहीं मिला किन्तु सात वर्ष बाद ही जब उन्हें वैधव्य ने आ घेरा तो उनके सामने आजीविका का प्रश्न खड़ा हो गया।

इस परिस्थिति ने उन्हें महाराज उम्मेदसिंह के राजघराने में जाने को मजबूर कर दिया। इस बीच धीरे-धीरे अन्य घरानों से सम्पर्क हुआ तो वहां भी जाना शुरू कर दिया। रावटी महाराज के वहां भी जाना होता। वहां तो और भी गायिकाएं आतीं। रसूलन, सिद्धेश्वरी भी आतीं। रावटी महाराज बड़ी समझ वाले थे। कोई गायक-गायिका जब एक राग में दूसरी राग का मिलाप कर देते तो वे तत्काल ऐसा करने से रोक देते।

उन्हीं दिनों 'आंधियां' नामक फिल्म की शूटिंग के सिलसिले में देवानंद जोधपुर आये। उन्होंने गवरीदेवी का भी गाना सुना। वह गाना उन्हें इतना पसन्द आया कि उन्होंने गवरीदेवी को मुम्बई चलने को कहा परन्तु गवरीदेवी के लिए यह संभव नहीं था। वह जाना तो चाह रही थी पर जाति के बंधन बड़े तगड़े थे। जातिवालों ने कहा कि वापस आकर मुंह मत दिखाना। वहीं समुन्दर में डूब मरना। घरवाले भी नहीं चाहते थे। गवरीदेवी ने अपने रूंधे गले से मुझे कहा कि जाति का ऐसा बंधन नहीं होता तो वे फिल्मों में चली जाती।

सन् 1957 में सार्वजनिक कार्यक्रमों में भागीदारी की शुरूआत गवरीदेवी ने जोधपुर के प्रसिद्ध सरोज वादक दामोदरलाल काबरा के कहने पर की। फिर तो आकाशवाणी और संगीत नाटक अकादमी से भी उनका जुड़ाव हुआ और कार्यक्रम पर कार्यक्रम प्रारंभ हुए। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने तो गवरीदेवी को पूरे हिन्दुस्तान की यात्रा करा दी। सब ओर गवरीदेवी ने राजस्थानी लोकसंगीत की गहरी छाप छोड़ी।

गवरीदेवी ने बताया कि तब तो ऐसी स्थिति थी और अब लोग कहते हैं कि विदेश चली जाओ। मैं भी बहुत सोचती हूं पर यह भी जानती हूं कि वहां के लोग रवीश को नहीं समझ पायेंगे। हम उन्हें क्या सुनायेंगे! विदेश कोई सैर सपाटे के लिए तो जाना नहीं है। यों कई विदेशी मेरे पास आते रहते हैं। एक अंग्रेज तो मेरा शिकार का गाना 'सूरियो धीमो धीमो मधरो वाज' टेप कर ले गया। आस्ट्रेलिया का भी एक सीखने आया था। वह मेरे घर रहा भी किन्तु हमारे तो अंडा मीट वगैरह नहीं चलता सो वह कुछ ही दिन रहा और फिर चलता बना।

- शेष पृष्ठ सात पर

मांडों की शोभा में मांडे

-डॉ. तुक्तक भानावत-

कोई समय था जब मेवाड़ में मांडा रजवाड़ों का अनूठा तथा जायकेदार भोज्य था। इसके साथ केसरिया भांत चावल सोने में सुहागे की तरह स्वाद को द्विगुणित-शतगुणित कर देता था। बाद में यह भोज्य मांडों यानी विवाहोत्सवों का विशिष्ट भोजन बना। सेठों, श्रीमंतों तथा उच्चकुलों में इसका प्रचार खास पहचान बना। मांडा एक विशेष प्रक्रिया द्वारा तैयार किया जाता है। उदयपुर के कानोड़-भीण्डर कस्बे के चौबीसा ब्राह्मणों में इसका विशेष चलन रहा और इसे बनाने वाले भी वे ही लोग हैं जो दूर-सुदूर तक के विवाहों तथा विशिष्ट आयोजनों में बुलाये जाते रहे और मांडा-व्यंजन से समारोह को शोभित करते स्वयं भी प्रशंसित होते रहे।

कानोड़ के जयप्रकाश चौबासा, व्यास ने बताया कि सामन्तीकाल में राजा-महाराजाओं के विवाह से लेकर सामन्तों, ठाकुरों तथा जागीरदारों के विवाहोत्सवों में उनके पूर्वजों ने अपनी मण्डली के साथ मांडा की रसोई बनाकर जगह-जगह सोहरत पाई। दिल्ली-मुम्बई-कलकत्ता तक जाकर इस भोज्य पदार्थ की महक फैलाई और इनाम-इकराम तक प्राप्त किये। कानोड़ के हुक्मीचन्दजी वोरा, किशनलालजी व्यास तथा पन्नालालजी व्यास ने बड़ा नाम कमाया।

वर्तमान में 97 वर्षीय शोभालालजी व्यास इस कला के बड़े उस्ताद हैं जिनके पास लम्बी यादगारों का खजाना है। वे बताते हैं कि तब विवाह की शोभा ही मांडे थे। जिस विवाह में मांडा न बने वह विवाह ही अधूरा लगता था। एकबार जिस पर इसका स्वाद चढ़ गया वह हमें याद करता और वर्षों तक मांडा का भोजन यादगार बना रहता। हमारी तो पहचान ही मांडा वाले ब्राह्मण की हो गई थी। विवाह की सीजन में चार-चार महीने पहले से हमें बुक कर लिया जाता। पांच-सात व्यक्तियों की हमारी मण्डली हो जाती।

मांडे ताजे ही परोसे जाते अत: आठ-आठ घंटे तक हमारी भट्टी चलती रहती। भीण्डर के जगदीशचन्द्रजी भट्ट तथा पुरुषोत्तमजी चौबीसा की भी अच्छी टीम थी। कानोड़-भीण्डर के अलावा केदारिया में भी मांडे बनाने वाले थे पर अब तो न वैसा मांडा (विवाह) रहा और न मांडा का भोजन ही। सब समय-समय की बात है।

शोभालालजी ने बताया कि मांडे की सिकाई उल्टे हांडे (मटके) पर होती है। इसके लिए मटके के छेद कर उसे चूल्हे का सा रूप दे दिया जाता है। इस छेद में से धीरे-धीरे जली लकड़ी द्वारा धीमी सिकाई करनी होती है। आंच तेज न हो, इसके लिए पतली-पतली लकड़ियां दी जाती हैं।

मांडा तैयार करने के लिए लोकवन किस्म के गेहूं का आटा मुफीद माना जाता है जो ताजा पीसा हुआ तथा लोच देने वाला होता है। पीसे आटे को फैलाकर ठंडा कर दिया जाता है। लोच तथा आवश्यकतानुसार पतलापन बना रह सके, इसके अनुसार ही नमक डाला जाता है।

इस आटे को एक घंटे तक भिगोकर रखना होता है ताकि ठीक से उसका लोचदार लोया बन सके। यह लोया सामान्य रोटी से तीन गुना बड़ा होता है। यह बेलन-पाटले पर बेला जाकर हाथों में लपेटा देते हुए फैलाया जाता है। इसे पकाने के लिए जितना बड़ा हांडा होगा, उतना ही बड़ा फैलाव दिया जायेगा। पतला मांडा अधिक जायकेदार होता है। मंद-मंद आंच पर तब तक इसकी सिकाई होती है जब तक कि उसका रंग बादामी न हो जाय। उसके बाद वह गर्म देशी घी के भगोने में छोड़ दिया जाता है ताकि घी से वह तर हो जाय। परोसते समय इसे चिमटे से पकड़ घी को निथार लिया जाता है।

मांडे के साथ दाल का मेल रहता है। यह दाल चना-उड़द का मिश्रित रूप लिये होती है। दाल भी मांडों की तरह विशेष प्रकार से बनाई जाती है। इसे गोबर के कंडे पर मधरे-मधरे उबाला जाकर अलग से किसी छोटे पात्र में तेल-हींग का तड़का लगाकर दाल में छोड़ दिया जाता है।

शोभालालजी ने बताया कि मांडे को बड़े स्तर पर यदि प्रचारित किया जाय तो यह पूरे विश्व में अपने जायके की पहचान दे सकता है। फाइव स्टार होटलों की शोभा बन सकता है। बड़े-बड़े समारोह में अब कभीकभाक ही इसे देखा जा सकता है लेकिन जहां भी इसकी दस्तक होती है, यादगार छोड़े बिना नहीं रहता।

राज्यस्तरीय कथा अलंकरणों की घोषणा

कथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान जोधपुर प्रदत्त राज्यस्तरीय कथा अलंकरण शृंखला के अन्तर्गत इस वर्ष हिन्दी एवं राजस्थानी के सात साहित्यकारों, दो पत्रकारों और दो साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकों को अलंकृत किया जाएगा। संस्थान के सचिव मीठेश निर्मोही ने बताया कि संस्थान के अध्यक्ष प्रो. जहूर खां मेहर एवं निदेशक चैनसिंह परिहार ने संयुक्त रूप से घोषणा की कि प्रो. सत्यनाराण को 'सूर्यनगर शिखर सम्मान', प्रीता भार्गव को काव्यकृति 'बाकी सब खैरियत है' पर 'नन्द चतुर्वेदी कविता सम्मान', चरणसिंह पथिक को कहानी संग्रह 'गौरू का लेपटाप और गौर्की की भैंस' पर 'पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कथा सम्मान', दिनेश पंचाल को 'बहुरूपिये लोग' पर 'रघुनंदन त्रिवेदी सम्मान' दिया जाएगा।

इसी तरह डॉ. ओम नागर को अनुवाद कर्म पर 'सत्यप्रकाश जोशी कविता सम्मान', रामेश्वर गोदारा को कहानी संग्रह 'वीरे तू लाहौर वेखण आई' पर 'सांवर दइया कथा सम्मान', डॉ. नीरज दइया को 'ऊंडै अंधारै कठैई' पर 'डॉ. नारायणसिंह भाटी सम्मान', भुवनेश जैन को 'गोवर्द्धन हेड़ाऊ रचनात्मक पत्रकारिता सम्मान', शिवलाल वर्मा को 'सूरज एन. शर्मा फोटो पत्रकारिता सम्मान', कमर मेवाड़ी को 'प्रकाश जैन 'लहर' साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान', दुलाराम सहारण को 'पारस अरोड़ा 'अपरंच' साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान' प्रदान किया जाएगा।

शब्द रंजन
उदयपुर, सोमवार 15 जनवरी 2018

सम्पादकीय

घटते पाठक गिरती किताबें

यह क्या बात है, ज्यों-जयों साहित्यिक समारोहों की धूम चमत्कारी लगती है, साहित्य से जुड़े आयोजन आंचलिकता से बढ़कर अखिल विश्व स्तरीय परचम देने लगते हैं। लोकार्पण की जाने वाली पुस्तकों की समीक्षाएं और तड़क-भड़क देते आयोजन प्रशंसा की फूलझड़ियों में इतराने लगते हैं त्यों-त्यों साहित्य का स्वाद बेमेल होता लक्षित होता है।

अब सृजन से अच्छी किताबें छपती हैं। किताबों से अच्छे लोकार्पणों के धूमधड़ाके होते हैं। लोकार्पणों से अच्छी प्रशंसाएं पुल बांधती मिलती हैं और उनसे भी अच्छे प्रीतिभोज के स्वाद तरी देते खुशबू से आप्लावित होते महक देते मिलते हैं।

साहित्य की विधाएं भी प्रयोगधर्मी बनी इठलाती लगती हैं। कुछ नया, अजूबा लिखने, करने, छपने की धुन ही अब सिर खुजलाती है। यह सब देख पहले वाली पीढ़ी निराश है। वह हर चीज को पुरातनता के साथ देखना चाहती है। वही कांगसी, कंघा उसे अच्छा लगता है जिसमें जूं आ जाय। नई पीढ़ी यूज एण्ड थ्रो की परम पूज्य विश्वासी बनी हुई है। कई तरह के शैम्पू वैम्पू निकल गये हैं। उनसे खुशनुमा बना जाय तो बाल की खाल तक खुशबू पहुंचेगी। बालों को खरोंच तक नहीं आयेगी। तीसरी-चौथी पीढ़ी तो जूं क्या होती है, समझ ही नहीं पायेगी। जीना इसी का नाम है।

पुस्तक मेले में जाकर पता लगा एक हिन्दी सेवी को कि जिस हिन्दी को वह अन्तर्राष्ट्रीय पसरी भाषा समझता रहा, उसकी किताबें बहुत कम बिक रही हैं। जो अंग्रेजी को दोयम दर्जे की समझ रहे हैं और वाकई जिसे बोलने वाले भी बहुत कम हैं, उस भाषा की किताबें धनाधन बिक्री पार कर रही हैं। उसकी अक्कल अड़ गई है कि यह कैसे क्या हो रहा है।

इधर वर्षों से हिन्दी लाओ, अंग्रेजी भगाओ बेनर तले हर साल जो समारोह आयोजित हो रहे हैं उनके ही कस्बे में हिन्दी दुम दबाती भागती लग रही है। हिन्दी स्कूल में पढ़ने वाले छोरों की सख्या घटत दे रही है और अंग्रेजी स्कूलों का जोर बढ़ रहा है।

आयोजक भीतर पेटे सब समझ रहा है पर मजबूर है। बड़ेरे जो छोड़ गये उस विरासत को बनाये रखने और अपने द्वारा प्रतिवर्ष विद्वानों द्वारा कथित प्रशंसात्मक विचारों के पुलिन्दे में गोबर के कीड़े की तरह फंसा हुआ है तो फंसा रहे पर अपने बाल बच्चों के अंग रेजी पहनाकर उनका भविष्य अवश्य प्रकाशमान कर रहा है।

संगोष्ठियों और सेमीनारों में व्यक्त विचार और बहसबाजी चलती रहेगी। 'निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल' समय सापेक्ष होने को टल्ली दे रहा है। प्रश्न है, चिंता, चिंतन और चिता में आप किसको चुनेंगे या फिर समस्या चाहे भाषा की हो, रसोईघर की हो, साहित्य सृजन की हो या पठन-पाठन की अथवा निज पहचान की। आप कितनों को पढ़ रहे हैं? क्या यह सवाल नहीं है कि पाठक आपको क्यों पढ़ें?

छपते-छपते -

यह अंक शब्द रंजन के दो वर्ष पूर्ण कर तीसरे वर्ष में प्रवेश लिये है। पिछले वर्षों में कई उतार-चढ़ाव आये किन्तु परिणाम सुखद ही रहा। इसके लिए हम शुभचिंतकों, विज्ञापनदाताओं, सहृदय पाठकों, स्नेहशील लेखकों तथा प्रशंसकों के प्रति अति आत्मीय भाव से धन्यवाद-आभार व्यक्त करते हैं। आशा है, उनका यह आत्मीय संबल हमें आगे भी प्राप्त होता रहेगा।

शब्द रंजन की यायावरी के दो वर्ष

आजकल स्थानीय समाचार पत्रों का चलन एक फैशन बन गया है। वे समय-असमय शुरू होते हैं और बन्द भी हो जाते हैं परन्तु उनमें से कतिपय ऐसे भी पत्र हैं, जिनका उद्देश्य राष्ट्रीय चरित्र, धरोहर के संरक्षण की संवेदनशीलता और सामाजिक समरसता से जुड़ा है। उनमें 'शब्द रंजन' के दो वर्ष की सोद्देश्य सफल यायावरी का महत्व गरिमापूर्ण रहा है।

बहुआयामी यह पत्र इस दृष्टि से अपना महत्व रखता है कि यह लोकसाहित्य, लोककला और लोकसंस्कृति के महत्व को संप्रेषित कर रहा है तथा साहित्य के विस्मृत होते प्रसंग-संदर्भों का स्मरण करवा रहा है। साथ ही भाषायी अनुष्ठान की दृष्टि से भी हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के मूल्यवान पक्षों त्वरिचों की पुनर्स्थापना करने में मील का पत्थर सिद्ध हो रहा है। इसका कारण है कि लोकसाहित्य तथा लोकमर्मज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत की अनुसंधानमूलक यायावरी। इसी अन्तर्दृष्टि से 'शब्द रंजन' यायावरी का दरजा पा सका है। समाचार चयन और उसकी संप्रेषण ऊर्जा भी इसका प्रमाण है।

मैं आशा करता हूं कि इस पत्र की यायावरी अनागत में भी निरन्तर गतिशील बनी रहेगी। इसकी सम्पादक रंजना भानावत इसके लिए श्रेय की पात्र हैं।

-डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर

पत्र पिटारी सामाजिक समरसता व संस्कारों का एहसास

विश्व में अनेक समाचार पत्र विभिन्न भाषाओं में छपते हैं जो उसी दिन पढ़े जाकर दूसरे दिन रद्दी बन जाते हैं। इन पर पूंजीपतियों का एकाधिकार है। सरकारी व गैर सरकारी स्त्रोतों से ये विज्ञापनों के रूप में करोड़ों रूपये कमाते हैं। धन्ना सेठों के पत्र वटवृक्षों के रूप में छपते रहते हैं। उनके नीचे मासिक, पाक्षिक व साप्ताहिक छपते हैं। अधिकतर पत्र ज्यादा दिन तक नहीं टिक पाते हैं जबकि वे पाठकों को नई-नई ज्ञानवर्धक जानकारियां उपलब्ध करा ज्ञान का संचार करते हैं। वे पत्र न्यूज ही नहीं देते, व्यूज भी देते हैं।

पिछले 50-60 वर्षों से उदयपुर में समय-समय पर अनेक पत्र प्रकाशित किये गये हैं। कइयों ने शिशु अवस्था में ही दम तोड़ दिया। इसके लिए समाज के साथ-साथ पाठक भी जिम्मेदार हैं।

इस कड़ी में विगत दो वर्ष पूर्व 'शब्द रंजन' ने जन्म लेकर हमारी सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, लोककला और सामाजिक समरसता व संस्कारों से अपना एहसास कराया। मैं प्रारंभ से ही इस जागरूक पत्र का पाठक हूं। इसमें सामाजिक संस्कृति के बारे में नई-नई जानकारियां उपलब्ध कराने का जो प्रयास किया जा रहा है वह अन्यों में नहीं मिलता। इसने बिना किसी रूकावट के निरन्तर वर्ष में चौबीस अंक पूरी मुस्तैदी के साथ प्रकाशित कर आगे की राह निर्धारित की है। हमारे देश में अनेक भाषायें, अनेक रीतिरिवाज, खानपान आदि में अनेक विविधताएं मिलती हैं। इन सब का पूर्ण अध्ययन करते इस पत्र ने हमारा ज्ञानवर्धन करने का ईमानदारी से निर्वाह किया है।

इस अवसर पर मैं अपनी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूं। विश्वास है कि यह पत्र निरन्तर अपने क्षेत्र में निडरतापूर्वक अपनी छवि का विकास करते सामाजिक सौहार्द्र में अभूतपूर्व योगदान देगा।

- वरिष्ठ अधिवक्ता,
फतहलाल नागोरी, उदयपुर

डॉ विमला 'साहित्य सुधाकर' से विभूषित

नाथद्वारा में श्री भगवतीपसाद देवपुरा स्मृति समारोह पर डॉ विमला भंडारी को 'साहित्य सुधाकर' मानद उपाधि से विभूषित किया गया।

बालिका शौचालय हस्तान्तरित

उदयपुर। वंडर सीमेंट लि. निम्बाहेड़ा द्वारा ग्राम पंचायत कारुण्डा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पायरी में नवनिर्मित बालिका शौचालय ब्लॉक को वंडर सीमेंट के उपाध्यक्ष (वाणिज्य) नितिन जैन द्वारा प्रधानाचार्य कविता चौधरी को हस्तान्तरित किया गया। नितिन जैन ने कहा कि जिले में संचालित 'उड़ान' बालिका शिक्षा अभियान के अंतर्गत वंडर सीमेंट लि. द्वारा विगत दो वर्षों में 43 राजकीय विद्यालयों में 53 शौचालय ब्लॉकों का निर्माण कराया गया है, जिससे लाभ 6000 विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

मकर संक्रांति पर

तिल गुड़ लो और मीठा बोलो
मकर संक्रांति कहती
मीठा बोलने का पर्व
14 जनवरी को आता
पूर्ण शरीर बना हड्डी का
नहीं जीभ में हड्डी
मुख से कठोर बोल ना निकले
प्रकृति नहीं चाहती।
मिलकर रहो मिलाकर खाओ
रहो स्वस्थ और सुखी
यही संदेश लाती।
भूलें उसे न कहीं वर्ष भर
वर्ष के शुरू में आती
पोंगल खीचड़ी भी कहलाती।

-डॉ. मालती शर्मा

HIGH-END LUXURY APPARTMENTS

ARCHI Platinum
Proud to be here...

SUKHADIA CIRCLE

ARCHI PARADISE
Luxury Living

100 FT. ROAD, SOBHAGPURA

NEW VIDHYA NAGAR, SECTOR - 3

ARCHI PEACE PARK
feel the peace

OPP. CA BHAWAN, SECTOR 14

ARCHI SOLITAIRE
Apartment with luxury

ARCHI GROUP OF BUILDERS

Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road towards DPS, Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001

Ph.: +91-98290 22203, +91-97848 28555, Email: himanshu@archigroup.in • Web: archigroup.in

सोजतिया ज्वेलर्स को विश्वसनीय रिटेल ज्वेलर्स पुरस्कार

उदयपुर। जेम्स एंड ज्वेलर्स ट्रेड कांउसिल ऑफ इंडिया की ओर से राजस्थान के सुप्रसिद्ध सोजतिया ज्वेलर्स को भारत के विश्वसनीय रिटेल ज्वेलर्स

का खिताब दिया गया है। अहमदाबाद में आयोजित इस प्रतिष्ठित पुरस्कार समारोह में देशभर के 400 से अधिक विख्यात ज्वेलर्स ने हिस्सा लिया। इस पुरस्कार के लिए दिल्ली, मुम्बई, चैन्नई, कोयंबटूर, कोलकाता, कोच्चि, बैंगलोर, कानपुर, राजकोट, सूरत, अमृतसर, पुणे आदि शहरों के ज्वेलरी निर्माता, निर्यातक और व्यवसायियों का नामांकन हुआ। विभिन्न ज्वेलर्स के बीच हुई स्पर्धा में सोजतिया ज्वेलर्स को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया।

सोजतिया ज्वेलर्स के निदेशक डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने बताया कि जेम्स एंड ज्वेलर्स ट्रेड कांउसिल ऑफ इंडिया पिछले डेढ़ दशक से ज्वेलरी व्यवसाय से संबंधित प्रतिष्ठित संस्थानों को पुरस्कृत कर रही है। सोजतिया ज्वेलर्स ने विश्वसनीयता का खिताब हासिल कर एक बार फिर अपना परचम लहराया है। डॉ. सोजतिया ने पुरस्कार का श्रेय ग्राहकों की संतुष्टि और लगातार बनी हुई विश्वसनीयता को दिया और बताया कि सोजतिया ज्वेलर्स पर 916 हॉलमार्क गोल्ड ज्वेलरी और आईजीआई सर्टिफाइड डायमंड ज्वेलरी बेहतरीन डिजाइनों में उपलब्ध रहती है।

पीआईएमएस द्वारा जार सदस्यों के मेडिकल कार्ड का लोकार्पण

उदयपुर। मीडिया कर्मी किसी भी राष्ट्र की सफलतम सुदृढ़ता के लिए रीढ़ की हड्डी होते हैं। लोकतंत्र के समुन्नयन विकास एवं विपुल संभावनाओं के बीज-रूप बनकर वे वटवृक्षीय आधार बनकर स्वस्थ समाज रचना का निर्माण करने में योग्यतम भूमिका का निर्वाह करते हैं और विपरित परिस्थितियों में भी अपना संबल बनाये रखते हैं।

ये विचार पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने फतहपुरा स्थित कार्यालय में आयोजित मेडिकल आईडी कार्ड के विधिवत लोकार्पण एवं वितरण समारोह में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि उदयपुर के जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के सभी सदस्य एकजुट होकर पिछले लगभग एक दशक से उल्लेखनीय भूमिका अदा कर रहे हैं। इसी से प्रभावित होकर उन्होंने जार से जुड़े सभी मीडियाकर्मियों और उनके परिवारजनों के रोगोपचार का जिम्मा लिया है। समारोह में पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने 93 सदस्यों के लिए जांच-कार्ड जारी किये।

जार के अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने श्री अग्रवाल के प्रति आभार व्यक्त किया और उम्मीद जगाई कि जार के सदस्य इससे पूरा लाभ उठायेंगे। डॉ. भानावत ने बताया कि पीआईएमएस में उपचार के लिए सदस्यों को मेडिकल कार्ड साथ ले जाना अनिवार्य होगा। रजिस्टेशन के साथ ही ओपीडी में खून, पेशाब, एक्सरे यूएसजी और भर्ती के दौरान खून, पेशाब, एक्सरे, सोनोग्राफी, एमआरआई एवं सिटी स्केन की जांचे निशुल्क रहेगी। इन सुविधाओं में सदस्य की पत्नी, माता-पिता और बच्चे भी शामिल हैं। उपचार के लिए जाने वाले परिजनों का हॉस्पिटल जाने के दौरान पहचान पत्र साथ ले जाना होगा।

प्रारंभ में जार द्वारा आशीष अग्रवाल का शॉल, पगड़ी, माला और उपरना ओढ़ाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में जार के पवन खाब्या, कपिल श्रीमाली, डॉ. रवि शर्मा, अजयकुमार आचार्य, अल्पेश लोढ़ा, मांगीलाल जैन, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, भूपेश दाधीच, राजेन्द्र हिलोरिया आदि उपस्थित थे।

जयपुर में ललित कला मेला

राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा जयपुर में 4 से 8 जनवरी को रवीन्द्र मंच पर कला मेले के आयोजन में 125 स्टालों में प्रदर्शित समसामयिक, आधुनिक तथा पारम्परिक चित्रकला तथा मूर्ति शिल्प को निहारने विद्वानों, कलाप्रेमियों तथा प्रशंसकों का लगातार मेला बना रहा।

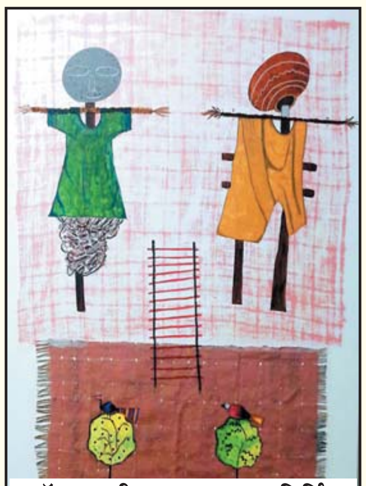

डॉ. कहानी भानावत द्वारा निर्मित पेंटिंग- खेतर बिजु

मेले में पश्चिम तथा उत्तर क्षेत्र के उदयपुर तथा पटियाला स्थित सांस्कृतिक केन्द्रों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिविर में दीव से प्रेमजीत बारिया, नई दिल्ली से शिवाज हुसैन, देवेन्द्र खन्ना, विनोद गोस्वामी, बनारस से सुनीलकुमार विश्वकर्मा, बून्दी से आशीष शृंगी, झुंझुनू से मोनू शेखावत, जयपुर से इरा टॉक, नीलू कवारिया तथा उदयपुर से डॉ. कहानी भानावत, भावना वशिष्ठ, जगदीश नंदवाना, नीलोफर, प्रेक्षिका द्विवेदी ने भाग लेकर एक्रेलिक, ऑयल, मिक्स मीडिया तथा वाटर कलर में चित्र बनाये। मेले की एक स्टॉल में डॉ. कहानी भानावत तथा डॉ. मनीषा चौबीसा के अलावा जयपुर की डॉ. मोनिका चौधरी, विजेता चारण तथा राजश्री चारण द्वारा निर्मित पेंटिंग सजाई गई।

मनोज भानावत तुलसी अमृत के संचालक बने

कानोड़ में पिछले 32 वर्षों से संचालित शिक्षण संस्थान तुलसी अमृत

मनोज भानावत, नरेशकुमार परमार व सवाईलाल पोखरना

निकेतन के मनोज भानावत संचालक बने। साधारण सभा की बैठक में करीब दो सौ सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति में मनोज सर्वसम्मति से संचालक पद पर आसीन हुए। श्री भानावत विगत सत्रह वर्षों से वहां कोषाध्यक्ष थे। इससे पूर्व संचालक शान्तिचन्द्र बाबेल (84) सेवानिवृत्त हुए। अध्यक्ष पद पर पुनः मुम्बई के नरेशकुमार परमार निर्वाचित किये गये।

संरक्षक समाजसेवी सवाईलाल पोखरना ने बताया कि तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् आचार्य श्री तुलसीगणी जब कानोड़ बिराजे रहे थे तब उन्हीं के सान्निध्य तथा आशीर्वाद से एक जनवरी 1986 को इस संस्था की परिकल्पना बनी। वर्तमान में कला, वाणिज्य तथा विज्ञान तीनों संकाय में हायर सेकण्डरी तक की यहां पढ़ाई होती है। छात्रों तथा छात्राओं के लिए अलग से छात्रावास की सुविधा है। गुरुकुलीय पद्धति पर अध्ययन-अध्यापन की उच्चस्तरीय सुविधा के कारण ही प्रतिवर्ष यहां की छात्र-छात्राएं मेरिट में अपना दबदबा रखती हैं।

कीर्ति श्रीवास्तव को सम्मानोपलब्धि

भोपाल हिन्दी भवन में बाल साहित्य सृजन के लिये 'साहित्य समीर दस्तक' की संपादिका श्रीमती कीर्ति श्रीवास्तव को डॉ. रमेशचन्द्र शाह, संतोष चौबे, बटुक चतुर्वेदी एवं प्रभु दयाल मिश्र द्वारा 'डॉ. मालती बसन्त बाल साहित्यकार सम्मान-2017' से सम्मानित किया गया। शिव दुर्गा विकास समिति एवं 'अभिव्यक्ति विचार मंच' के संयुक्त तत्ववाधान में नागदा में आयोजित समारोह में कीर्ति श्रीवास्तव को मुख्य अतिथि सहकारिता राज्य मंत्री विश्वास सारंग ने 'राष्ट्रीय अभिव्यक्ति गौरव सम्मान-2018' से सम्मानित किया।

पुरा संपदा के अतुलनीय खोजी

बूंदी निवासी ओमप्रकाश कुक्की वर्ष 1966 से हाड़ौती-मेवाड़ की बनास तथा चंबल के किनारे बसे पुरा-मानव की अद्भुत खोजी बने हुए हैं। अब तक सौ से अधिक स्थल खोज चुके हैं। उनकी यह खोज सर्वथा अप्रतिम और अतुलनीय रही है। शैलचित्रों की इतनी

गुफा-पट्टियां खोजने के कारण पूरे विश्व ने उनकी मान्यता स्वीकारी है। देश-विदेश के अनेक विद्वानों तथा खोजियों ने उनके कार्यों पर खोज की पगडंडियां नापी हैं। पिछले दिनों शब्द रंजन कार्यालय में उनसे बतियाते अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता तथा डॉ. महेन्द्र भानावत।

एडवोकेट नागोरीजी विशिष्ट संरक्षक बने

उदयपुर जिले के भीण्डर कस्बे में 13 मई 1934 को जन्मे एडवोकेट फतहलालजी नागोरी ने हिन्दी मिडिल वहीं से उत्तीर्ण कर 1950 में उदयपुर के फतह हाईस्कूल से अंग्रेजी मिडिल, हाईस्कूल तथा भूपाल कॉलेज से एटेंस, बीकॉम, एलएलबी किया।

सन् 1956 से 62 तक टेक्स वकालत और फिर वकालत का क्षेत्र चुना जो अद्यावधि जारी है। नागोरीजी ने राजनीति में भी अपना प्रभावी परचम दिया। सन् 52 से 60 तक पीएसपी में रहे फिर दो वर्ष स्वतंत्र पार्टी में और फिर कांग्रेस में अब तक पहचान बनाये हुए हैं। इस बीच शहर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। सन् 2000 से सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र में प्रवेश कर जरूरतमंदों, दिव्यांगों, बीमारों, पीड़ितों, बच्चों, महिलाओं तथा पशु-पक्षियों की सेवार्थ सर्वप्रकारेण सहयोग देने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। उदयपुर तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विविधरूपा सेवा-शिक्षा कार्यों में कार्य कर रही संस्थाओं यथा कस्तूरबा मातृ मंदिर, नव निर्माण संघ, हंसावास शिक्षा संस्था, भीण्डर सांवरिया ट्रस्ट, गो सेवा समितियां तथा जैन संस्थानों से सक्रिय जुड़ाव लिए हैं।

सीनियर सिटीजन परिषद तथा महाराणा प्रताप सीनियर सिटीजन संस्थान के संरक्षक एवं अध्यक्ष के रूप में महनीय पहचान लिये नागोरीजी समता संदेश पाक्षिक पत्र में भी अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति रखते हैं।

एमएमपीएस को बेस्ट स्कूल अवार्ड

उदयपुर के महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल को शिक्षा जगत में एशिया की प्रख्यात डिजिटल लर्निंग मैगजीन समूह द्वारा होटल आईटीसी बेंगलुरू में आयोजित पांचवी इलीट्स स्कूल लीडरशिप समिट में सर्वश्रेष्ठ स्कूल का सम्मान प्रदान किया गया। यह सम्मान स्कूल के प्रधानाचार्य संजय दत्ता ने लगातार तीसरे वर्ष भी प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक, प्रबंधन, सुरक्षा नवाचार तथा वैश्विक स्तर के कार्यक्रम जैसे कई मानकों पर आधारित एवं विश्व स्तरीय संस्थान द्वारा एशिया की सबसे बड़े सर्वेक्षण के आधार पर प्रदान किया जाता है।

'टाटा मोटर्स जेनुइन ऑयल' लॉन्च

उदयपुर। टाटा मोटर्स लि. ने वाणिज्यिक वाहन रेंज के लिए ब्रांडेड 'टाटा मोटर्स जेनुइन ऑयल' लॉन्च किया है। टाटा मोटर्स लि. के सीनियर वाइस-प्रेसिडेंट, कस्टमर केयर, सीवीबीयू श्री आर. राम कृष्णन ने कहा कि टाटा मोटर्स के वाहनों के लिए तैयार और परीक्षण किए गए उत्कृष्ट गुणवत्ता वाला मल्टी-पर्पज़ ऑयल का यह रेंज नई पीढ़ी के इंजनों और अन्य एग्री गेट्स के अनुकूल है, यही वजह है कि कंपनी अपने ग्राहकों को बेहतर पर फॉर्मेंस की खातिर सही वातावरण में उपयुक्त ऑयल इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। उत्पाद के इस रेंज में हाई पर फॉर्मिंग इंजन ऑयल, गियर ऑयल्स और रीयर एक्सेल ऑयल शामिल हैं, जिसे टाटा मोटर्स द्वारा रोड एवं ऑफरोड ऐप्लीकेशंस सेगमेंट के वाणिज्यिक वाहनों के रेंज के लिए बनाया गया है। कंपनी ब्रांडेड ऑयल्स की इस नई रेंज को भारतीय वाणिज्यिक बाज़ार की विशिष्ट जरूरतों और नियमनों के मुताबिक विकसित किया गया है। ग्राहकों की सुविधा के लिए टाटा मोटर्स जेनुइन ऑयल्स विशिष्ट तौर पर टाटा मोटर्स के सभी 1400 सीवीबीयू-अधिकृत वर्क शॉप्स पर उपलब्ध हैं। चार वैरिएंट्स में पेश टाटा मोटर्स जेनुइन ऑयल्स को विशेष तौर पर नई पीढ़ी के इंजनों को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है।

खान पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण सप्ताह का आयोजन

उदयपुर। वंडर सीमेंट लि. की भट्टकोटड़ी लाईम स्टोन माईन्स पर भारतीय खान ब्यूरो (अजमेर) के तत्वावधान में मनाये जा रहे 28 वें खान पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण सप्ताह के उपलक्ष्य में खान निरीक्षण दल द्वारा वंडर सीमेंट लि. की खदान का निरीक्षण किया गया। वंडर सीमेंट लि. के माईन्स प्रमुख एम. के. बोकाड़िया द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया। कम्पनी के अध्यक्ष, वर्क्स एस. एम. जोशी ने निरक्षण दल को खान पर्यावरण के साथ-साथ खनिज दोहन के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा खनिज एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुक किया। महा प्रबन्धक (माईन्स) अशोक आचार्य ने खदान में चल रहे संरक्षण कार्यों को जानकारी दी। निरीक्षण दल के सदस्यों ने वंडर सीमेंट द्वारा खान पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण के प्रति किये गये कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान सुरक्षा स्लोगन, पोस्टर, प्रश्नोत्तरी, गीत, पर्यावरण वार्ता एवं पर्यावरण पर आधारित लघु नाटिका का मंचन किया गया तथा माईन्स परिसर में वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम का संचालन गिरीश श्रृंगी ने किया। धन्यवाद कम्पनी के ओ. पी. राजपुरोहित ने किया।

वोडाफोन सैमसंग में करार

उदयपुर। वोडाफोन ने गुरूवार को मोबाइल हैण्डसेट निर्माता सैमसंग के साथ सामरिक साझेदारी का ऐलान किया, जिसके तहत कंपनी सैमसंग 4जी स्मार्टफोन्स की चुनिंदा रेंज को बेहद किफ़ायती दामों पर और आकर्षक कैशबैक ऑफर के साथ उपलब्ध कराएगी। वोडाफोन के मौजूदा एवं नए उपभोक्ता सैमसंग के लोकप्रिय 4जी स्मार्टफोन्स- गैलेक्सी जे2 प्रो, गैलेक्सी जे7 नेक्स्ट या गैलेक्सी जे7 मैक्स में से कोई भी फोन खरीद सकते हैं और1500 रु के कैशबैक का लाभ उठा सकते हैं।

इस ऑफर के बारे में बात करते हुए वोडाफोन इण्डिया में कन्ज्यूमर बिज़नेस के एसोसिएट डायरेक्टर अवनीश खोसला ने कहा कि हम चाहते हैं कि हमारे उपभोक्ता सैमसंग के सबसे लोकप्रिय स्मार्टफोन्स पर वोडाफोन सुपरनेट के 4जी डेटा स्ट्रॉन्ग नेटवर्क का लुत्फ उठाएं। इस साझेदारी के माध्यम से हम विभिन्न कीमतों के 4जी स्मार्टफोन्स पर आकर्षक कैशबैक ऑफर लेकर आए हैं। इस मौके पर सैमसंग इण्डिया में चीफ़ मार्केटिंग ऑफिसर रणजीवजीत सिंह ने कहा कि हमें खुशी है कि हम वोडाफोन के साथ साझेदारी में उपभोक्ताओं के लिए यह अनूठा ऑफर लेकर आए हैं, जिसके तहत उपभोक्ता किफायती दरों पर हमारी लोकप्रिय गैलेक्सी जे सीरीज के स्मार्टफोन खरीद सकेंगे।

'अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ वारंटी' की पेशकश

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने ट्रैक्टर-ट्रेलर्स, 16 टन एवं उससे अधिक जीवीडब्ल्यू (ग्रॉस व्हीकल वेट) वाले मल्टी-एक्सल ट्रकों और टिप्पर्स के संपूर्ण रेंज पर 6 साल के लिए अपनी तरह का पहला 'अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ वारंटी' की घोषणा की है। टाटा मोटर्स संपूर्ण एमएंड एचसीवी रेंज पर 6 साल की स्टैंडर्ड ड्राइवलाइन वारंटी पेश करने वाली भारत की पहली कंपनी है। यह टाटा मोटर्स के ट्रकों की विश्वसनीयता, टिकाऊपन और तकनीकी उत्कृष्टता का स्पष्ट प्रमाण है, जो ग्राहकों द्वारा दिखाए गए भरोसे का पूरक है। इसके अतिरिक्त, ड्राइवलाइन्स (इंजन, गियरबॉक्स एवं रियर एक्सल) स्टैंडर्ड ऑफर के तौर पर आता है, जबकि संपूर्ण वाहन की वारंटी अवधि को 24 माह से बढ़ाकर 36 माह कर दिया गया है।

कॉमर्शियल व्हीकल बिज़नेस यूनिट के हेड गिरीश वाघ ने कहा कि पिछले 70 वर्षों से भी अधिक समय से टाटा मोटर्स नई टैक्नोलॉजिज, उत्पादों एवं मूल्य-वर्धित सेवाओं को पेश करने के मामले में अग्रणी रही है। 6 साल की वारंटी उद्योग में एक और पहला कदम है, जो हमारे ग्राहकों को बेहतर जीवचक्र के लाभ की पेशकश करती है। हम अपने वाहनों की गुणवत्ता जिनमें सबसे मुश्किल उपयोग के अधीन है, की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए अपने मध्यम एवं भारी वाणिज्यिक वाहनों पर अपने ग्राहकों को नई वारंटी की पेशकश करते हुए हमें खुशी हो रही है।

महिंद्रा एएमसी ने पेश की महिंद्रा उन्नति इमर्जिंग बिजनेस योजना

उदयपुर। महिंद्रा फाईनेंस की सहायक कंपनी तथा महिंद्रा म्युचुअल फंड की इनवेस्ट मैनेजमेंट कंपनी महिंद्रा असेट मैनेजमेंट कंपनी प्रा. लि. ने महिंद्रा उन्नति इमर्जिंग बिजनेस योजना लांच की है। यह एक मिड कैप फंड तथा ओपेन एंडेड इक्विटी स्कीम है, जो मुख्यतया मिड कैप के स्टॉक्स में निवेश करेगा। इस नए फंड का ऑफर 8 जनवरी को खुलकर 22 जनवरी को बंद होगा और 6 फरवरी के बाद यह फंड फिर से क्रय- विक्रय के लिए खुलेगा।

शनिवार को आयोजित प्रेसवार्ता में महिंद्रा एएमसी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी आशुतोष बिश्नोई ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था चहुंमुखी विकास की ओर अग्रसर है और चूंकि भारत सरकार सुधारों, निवेश के अवसरों को बढ़ाने पर काम कर रही है, अतएव इससे अर्थव्यवस्था और भी सुदृढ़ होगी। यह असंगठित बाजार शेयर को संगठित बाजार में रुपांतरित करेगा, जो कि एक बहुत बड़ा उपभोक्ता सेगमेंट का खंडित क्षेत्र है। इससे हर घर में तरक्की होगी और राष्ट्र की तरक्की में यह सहायक सिद्ध होगा। बिश्नोई ने कहा कि अपेक्षाकृत मंदी के माहौल में भी मिड कैप कंपनियों ने लॉर्ज कैप कंपनियों की तुलना में उम्दा प्रदर्शन कर आय में अच्छी वृद्धि दर्ज की है। मिड कैप के क्षेत्र में हम स्टॉक्स से संबंधित निवेश में अच्छे खासे अवसर देख रहे हैं। खासकर उन क्षेत्रों में जिसमें बहुवार्षिक संरचनात्मक वृद्धि की संभावनाएं हैं। जैसे -जैसे अर्थव्यवस्था बड़ी होती जाएगी, एक अच्छे बाजार के तैयार होने की संभावना बलवती होगी, जिसमें बहुतेरे सेक्टरों के लिए बेहतरीन अवसर प्राप्त होंगे।

यह फंड उन निवेशकों को उभरती हुई कंपनियों की विकास यात्रा में सहभागी होने का एक मौका प्रदान करेगा, जिनके पास भविष्य में मार्केट लीडर बनने की योग्यता है। अधोलिखित 4 कारण हैं, जिससे महिंद्रा उन्नित इमर्जिंग बिजनेस योजना में निवेश किया जा सकता है।

(1) बढ़ता भारत- विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बनने का माद्दा भारत में है।

(2) रिटर्न की क्षमता- मध्यम आकार वाले व्यापार जो खुद को नियमित रूप से अपग्रेड और परिष्कृत करते रहते हैं, उनके पास लंबी अवधि में जोखिम से समायोजित ज्यादा रिटर्न पाने की योग्यता होती है।

(3) निवेश की गुणवत्ता- सभी सेक्टरों में से स्थिर रूप से प्रदर्शन करने वाले व्यापार का बॉटम अप चुनाव जो आगे चलकर लॉर्ज कैप बन सकते हैं।

(4) सक्रिय प्रबंधन- पोर्टफोलियो का प्रबंधन कुशलता पूर्वक किया जाना, जिसका मुख्य उद्देश्य मिड कैप में निवेश करना है।

महिंद्रा उन्नित इमर्जिंग बिजनेस योजना उन निवेशकों के लिए उपयुक्त है, जो लंबी अवधि के पूंजी अर्जन में भरोसा रखते हैं। यह स्कीम न्यूनतम ६५ फीसदी मिड कैप कंपनियों में और बाकी 35 फीसदी दूसरी कंपनियों में निवेश करेगी। स्टॉक्स का बॉटम- अप सेलेक्शन छोटे बाजार में मार्केट लीडरों पर फोकस करेगा या बड़े मार्केट में सिंगल लाइन बिजनेस में फोकस करेगा, जिसने वृद्धि दर्शाई हो और उसमें अगला लॉर्ड कैप बनने की संभावना हो।

सहारा लाइफ इंश्योरेन्स को मिली सफलता

उदयपुर। एक महत्वपूर्ण निर्णय में सिक्योरिटी एपेलेट ट्रिब्यूनल ने इंश्योरेन्स रेग्युलेटरी डेवलपमेंट अथॉरिटी के 28 जुलाई 2017 के उस आदेश को खारिज कर दिया जिसमें सहारा लाइफ इंश्योरेन्स के जीवन बीमा व्यवसाय को एक बाहरी बीमाकर्ता-आईसीआईसी प्रूडेन्शियल लाइफ इंश्योरेन्स कम्पनी लि. को हस्तांतरित करने को कहा गया था। सहारा की अपील को स्वीकृति देते हुए सिक्योरिटी एपेलेट ट्रिब्यूनल ने इंश्योरेन्स अथॉरिटी के ऐसे रवैये पर गहरी चिन्ता जताई जिससे उन्होंने सहारा लाइफ इंश्योरेन्स के विरूद्ध मामले में ऐसी कार्यवाही की। इंश्योरेन्स अथॉरिटी के इस कदम को बेहद घातक व अनियमित मानते हुए एडमिनिस्ट्रेटर की नियुक्ति व उसके सभी आगामी कदमों को मामले के तथ्यों व परिस्थितियों के चलते हानि पहुंचाने वाला माना गया। सिक्योरिटी एपेलेट ट्रिब्यूनल का मत था कि एडमिनिस्ट्रेटर की रिपोर्ट कम से कम विवादित आदेश पारित करने से पहले सहारा लाइफ इंश्योरेन्स को उपलब्ध करवाई जानी चाहिए थी। सहारा लाइफ इंश्योरेन्स को एक बड़ी मोहलत मिली है और उसके इस पक्ष को सिक्योरिटी एपेलेट ट्रिब्यूनल ने यह निर्देश देकर सही साबित किया है।

श्री सीमेंट करेगी यूनियन सीमेंट कम्पनी का अधिग्रहण

उदयपुर। श्री सीमेंट के निदेशक मण्डल ने गुरूवार को आयोजित बैठक में यूएई स्थित यूनियन सीमेंट कम्पनी (पी.एस.सी.) की निर्णायक हिस्सेदारी (न्यूनतम 92.83 प्रतिशत) को खरीदने की मंजूरी दी। इस अधिग्रहण की एंटरप्राइस वेल्यू 100 प्रतिशत इक्विटी हिस्सेदारी के लिये 305.24 मिलियन अमेरिकी डॉलर (नगद और नकद समतुल्य छोड़कर) है जो कि समापन के समय किये जाने वाले समायोजन के अधीन हैं।

वर्ष 1972 में स्थापित, यूसीसी यूएई की अग्रणी सीमेन्ट निर्माताओं में से एक और अबूधाबी सिक्योरिटीज एक्सचैंज (एडीएक्स) पर सूचीबद्ध कम्पनी हैं। यह 3.30 मिलियन टन प्रतिवर्ष की क्लिंकर और 4.0 मिलियन टन प्रतिवर्ष की सीमेन्ट उत्पादन क्षमता के साथ यूएई के रस-अल-खैमाह अमीरात में संचालन करती है।

डीबीडब्ल्यूआरएफ की अनूठी पहल

उदयपुर। महिला सशक्तीकरण की दिशा में कार्य करते हुए दाऊदी बोहरा महिलाओं को प्रोत्साहित करने तथा समाज में उन्हें आगे बढाने के प्रति समर्पित ट्रस्ट द दाऊदी बोहरा वीमंस एसोसिएशन फॉर रिलीजियस फ्रीडम (डीबीडब्ल्यूआरएफ) ने अपने दान की शक्ति अभियान के तहत दूरदर्शी पहुंच वाले कई कार्यक्रम आरंभ किए हैं। ये कार्यक्रम दाऊदी बोहरा समुदाय के भीतर और बाहर समस्याओं के ऐसे समाधान ढूंढने पर जोर देंगे, जिनसे बोहरा समाज के सभी सदस्यों के कल्याण का प्रयत्न किया जा सके। डीबीडब्ल्यूआरएफ डिजिटल लिटरेसी सर्टीफिकेशन प्रोजेक्ट, प्रोजेक्ट रोशनी और एड 101 जैसे दूर की पहुंच रखने वाले कार्यक्रम डिजिटल साक्षरताए फर्स्ट-एड किट को लेकर जागरूकता तथा दिव्यांग बच्चों के लिए आद्योपांत सेवाएं प्रदान करने से संबंधित समस्याओं के समाधान खोजने पर जोर देंगे। यद्यपि आत्मजीविका इन कार्यक्रमों का केंद्र-बिंदु है, फिर भी व्यक्तिगत कार्यक्रमों पर काम कर रहे सदस्यों को सुधार की कोशिश करने, निरीक्षणों का पता लगाने तथा उन पर अमल करने के साथ-साथ यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रत्येक कार्यक्रम आसान वितरण तथा चौबीसों घंटे समाधान उपलब्ध कराए, इसके लिए पूरी मदद की व्यवस्था की जाएगी।

सैयदना फखरुद्दीन ने दिये 200 से ज्यादा सवालों के जवाब

उदयपुर। गत 8, 9 और 12 जनवरी को मुद्दई परमपावन सैयदना फखरुद्दीन साहब ने जिरह में मुद्दालेह शहजादा मुफद्दल सैफुद्दीन के सीनियर काउंसल इकबाल छागला के 200 से ज्यादा सवालों के जवाब दिए। अपने जवाब में उन्होंने दो घटनाओं का जिक्र किया जिनमें 52वें दाई परमपावन सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन साहब ने व्यक्तिगत तौर पर मूल मुद्दई परमपावन सैयदना खुजैमा कुतबुद्दीन साहब के प्रति मुदालेह के व्यवहार को नापसंद किया था। इन घटनाओं का जिक्र श्री छागला के इस सवाल के जवाब में किया गया था कि क्या 52वें दाई ने कभी सैयदना कुतबुद्दीन साहब के प्रति मुद्दालेह के व्यवहार को नापसंद किया था। जिसे मूल रूप से परमपावन सैयदना ताहेर फखरुदीन साहब (टीयूएस) मुद्दई की मुकदमा संख्या 337/ 2014 में जिसे उनके पूर्व अधिकारी परमपावन स्व. सैयदना खुजैमा कुतबुद्दीन साहब आर (मूल मुद्दई) द्वारा बॉम्बे उच्च न्यायालय में दायर किया गया था।

18वां अखिल भारतीय सचेतक सम्मेलन

सम्मेलन में देशभर के 21 राज्यों के 87 प्रतिनिधियों की रही भागीदारी

उदयपुर। राज्यों की विधानसभाओं में सदस्यों के बीच का अनुशासन संयुक्त परिवार जैसा होना चाहिए। मुख्य सचेतकों को उपस्थिति, अनुशासन व आदेश की पालना के अपने दायित्व को बखूबी निभाते हुए सदन में आदर्श स्थितियां प्रस्तुत करनी चाहिए। सदस्यों की गरिमा से जुड़े हुए सदनों में वैचारिक अभिव्यक्ति के दौरान पर्सनल नहीं होकर ‘एग्री टू डिसएग्री’ का मंत्र अपनाना चाहिए। ये विचार राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया ने उदयपुर में आयोजित 18वें अखिल भारतीय सचेतक सम्मेलन में 8 जनवरी को उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि सदन का हर सदस्य अपनी विशिष्टताएं लिए होता है। हमें उसी के अनुरूप सदन में सामांजस्य बिठाना चाहिए। कुछ लोग वेल में आकर, शोरगुल कर अखबारों की हेडलाइंस में नाम पा जाते हैं जबकि घंटों मेहनत और रिसर्च के बाद अपना भाषण तैयार करने वालों के मुद्दे शोरगुल में खो जाते हैं। हमें इस ढर्रे को बदलना पड़ेगा। मुख्यमंत्री ने पूर्व राष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत को याद करते हुए कहा कि वे नए विधायकों को उनकी अच्छी स्पीच पर अपने कक्ष में बुलाकर सबके सामने शाबाशी दिया करते थे व उसी विधायक से सौ रुपए के लड्डू मंगवाकर बंटवाए जाते। उन्होंने विधानसभाओं के आर्काइव को शोधार्थियों व ग्लोबल सिटीजंस के लिए उपयोगी बताया।

सम्मेलन अध्यक्ष संसदीय कार्यमंत्री अनंत कुमार ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का स्मरण करते हुए कहा कि विधायकों को उनका मंत्र ‘टोका-टोकी करते रहो, रोका-रोकी मत करो’ हमेशा याद रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम सबको मिलकर पेपरलेस पार्लियामेंट का सपना जल्दी ही साकारा करना है। सचेतकों को मोटीवेटर और मोडरेटर की भूमिका भी निभानी होगी ताकि ससंसदीय कार्य समय का सटीक उपयोग हो सके।

संसदीय कार्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल, संसदीय कार्य राज्यमंत्री विजय गोयल, राजस्थान के संसदीय कार्य मंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़, गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया तथा सांसद अर्जुनलाल मीणा की मौजूदगी में ‘संकल्प से सिद्धि’ पर प्रकाशित कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया गया।

दूसरे दिन सम्मेलन के समापन पर प्रेसवार्ता में विजय गोयल ने कहा कि वेल में आकर कार्य प्रणाली को बाधित करने की प्रवृत्ति पर रोक लगनी चाहिए। इसके लिए एक प्रस्ताव भी पारित किया गया जिस पर शीघ्र ही सभी राजनीतिक दलों को विश्वास में लेकर नियम निर्धारित किए जाएंगे। इसके साथ ही सचेतकों को और अधिक सशक्त बनाने के लिए उन्हें इंफ्रास्ट्रक्चर, स्टाफ मुहैया करवाने पर सहमति बनी। सदनों में शून्यकाल को प्रभावी बनाने और सदन कम से कम 80 दिन तक चले इस तरह की कार्य प्रणाली स्थापित करने पर चर्चा की गई। इसकी रिपोर्ट भी तैयार कर सरकार को भेजी जाएगी। श्री गोयल ने कहा कि शून्यकाल प्रभावी होगा तो जनहित से जुड़े मुद्दों को प्रभावी तरीके से सदन में रखा जा सकेगा व उन पर प्रभावी डिबेट हो सकेगी। गोयल ने कहा कि हर शुक्रवार को संदन में प्राइवेट मेम्बर बिजनेस होता है, उसके बाद शनिवार और रविवार का दिन अवकाश का होता है। प्राइवेट मेम्बर बिजनेस को ज्यादा प्रभावी बनाने के लिए इसे शून्यकाल व प्रश्नकाल से पहले स्थान देने की आवश्यकता पर जोर दिया गया ताकि ज्यादा सदस्य उसमें उपस्थिति दे सके। सम्मेलन में देशभर के 21 राज्यों के 87 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सेंट्रल जेल में 435 कैदियों का चेकअप

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा के चिकित्सकों द्वारा गुरूवार को सेंट्रल जेल में महिला-पुरुष कैदियों तथा स्टाफ का मेडिकल चेकअप किया गया। पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि पीआईएमएस के चिकित्सकों ने गुरूवार को उदयपुर की सेंट्रल जेल में महिला व पुरुष कैदियों के साथ उपस्थित स्टाफ का मेडिकल चेकअप किया। इसमें आंख, नाक, कान व गला रोग के साथ हड्डी तथा स्त्री रोगों की जांच की गई। कैम्प में ई.सी.जी लेबोरेटरी व निशुल्क दवाइयां उपलब्ध करवाई गई। कैम्प में 435 कैदियों व स्टाफ का परीक्षण किया गया।

मांड गायकी की.....

(पृष्ठ दो का शेष)

गवरीदेवी पढ़ी-लिखी नहीं थी। केवल हस्ताक्षर करना जानती थी मगर हिन्दी फटाफट बोलती थी। बातचीत में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी धड़ल्ले से करती। मैंने कई बार बातचीत में उनको स्टेज, प्रोग्राम, पार्टी, वैराइटी, रेडियो, चैक, सिग्मेचर, मूड, इन्स्टूमेंट, प्राइवेट जैसे शब्दों का प्रयोग करते सुना।

मेवाड़ की और मारवाड़ की गायकी में गवरीदेवी को बड़ा अन्तर लगता। कहती- हम अपना गाना बढ़चढ़कर गाते हैं जबकि मेवाड़ में गाने को बढ़ाकर नहीं गाया जाता बल्कि वहीं-वहीं उसके इर्दगिर्द घुमा जाकर गाया जाता है। इससे गाने की गम्मत बंधती-उठती नहीं है पर देश-देश के गानों में अपनी कोई न कोई विशेषता तो होती ही है। यह तो राणाजी का देश है। यहां की कई बातें यों भी बड़ी बढ़ीचढ़ी हैं।

गवरी देवी ने मांड की ऊंचाइयां सेंतमेंत में ही नहीं छू लीं। इसके लिए उन्होंने रात-रात भर गाया। स्वर-साधना और शब्द-आराधना की। गाने में रात उन्हें सदैव प्रिय लगती और महसूस करती जैसे दिन न हो तो अच्छा ताकि वह रातभर गाया ही करे। इस दौरान उन्हें कई बार लगा जैसे रातें बरसने लगी हैं। गवरीदेवी ने गायकी में जो उदात्तता दी, उसके बाद वैसी गायकी जोधपुरी लहजे वाली अन्यत्र सुनने को नहीं मिली। उनको जिसने भी सुना वह आज भी उनके स्वरों के माधुर्य को नहीं भूला है। लगता है, गवरी क्या गई, अपने साथ पूरी गायकी ही ले गई।

जीवंता हॉस्पिटल ने दिया 400 ग्राम के शिशु को जीवनदान

उदयपुर। उदयपुर के जीवंता हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने भारत में ही नहीं बल्कि पूरे दक्षिणी एशिया में अब तक की सबसे छोटी व सबसे कम वजनी मात्र 400 ग्राम की नन्ही बिटिया को जीवनदान देकर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। सात महीनों तक जीवन और मौत के बीच चले लम्बे संघर्ष के बाद अब यह नन्ही बिटिया अपने घर जा रही है।

जीवंता चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. सुनील जांगिड़ ने बताया कि नन्ही बिटिया के जीवन की संघर्ष गाथा अनूठी है। कोटा निवासी सीता-गिरिराज दम्पती को शादी के 35 वर्षो बाद मां बनने का सौभाग्य मिला लेकिन इस दौरान उनका ब्लड प्रेशर बेकाबू हो गया। सोनोग्राफी में पता चला कि भ्रूण में रक्त का प्रवाह बंद हो गया है। तभी आपात परिस्थिति में 15 जून, 2017 को सीजेरियन ऑपरेशन से शिशु का जन्म को करवाया गया। जब बिटिया दुनिया में आई तब उसका वजन मात्र 400 ग्राम था। जन्म के बाद वह खुद सांस तक नहीं ले पा रही थी। शरीर नीला पड़ रहा था। इस पर उसे तुरंत जीवन्ता हॉस्पिटल की नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाई में शिफ्ट किया गया। यहां शिशु विशेषज्ञ डॉ सुनील जांगिड़, डॉ निखिलेश नैन एवं उनकी टीम द्वारा शिशु का विशेष निगरानी में उपचार शुरू हुआ।

डॉ. सुनील जांगिड़ ने बताया की इतने कम वजन के शिशु को बचाना हमारी टीम के लिए बहुत बड़ी चुनौती थी। अब तक भारत एवं पूरे दक्षिण एशिया में इतने कम वजनी शिशु के अस्तित्व की कोई रिपोर्ट नहीं है। इससे पहले भारत में अब तक 450 ग्राम वजनी शिशु का मोहाली चंडीगढ़ में सन 2012 में इलाज हुआ था। बहरहाल, इस नन्ही बिटिया को तुरंत वेंटीलेटर पर लिया गया। प्रारंभिक दिनों में शिशु की नाजुक त्वचा से शरीर के पानी का वाष्पीकरण होने से उसका वजन 360 ग्राम तक के स्तर पर आ गया।

धीरे-धीरे बून्द-बून्द दूध, नली के द्वारा दिया गया मगर शिशु को दूध पचाने में बार-बार परेशानी हो रही थी, इससे उसका पेट फूल जाता। सात हफ्तों बाद शिशु पूरा दूध पचाने में सक्षम हुआ और साढ़े 4 महीने के बाद मुंह से दूध लेने लगा। शिशु को कोई संक्रमण न हो इसका विशेष ध्यान रखा गया। शिशु को 4 बार खून भी चढ़ाया गया। शिशु की 210 दिनों तक गहन चिकित्सा इकाई में विशेष देखरेख की गई। अब सात महीने की कठिन मेहनत के बाद इस लाडली बिटिया का वजन 2400 ग्राम हो गया है, और अब यह पूरी तरह से स्वस्थ है। जीवन्ता हॉस्पिटल की टीम और बच्ची के माता पिता आज बहुत खुश हैं कि इतनी बड़ी कामयाबी मिली है। बिटिया का नाम मानुषी रखा है।

सीनियर प्रोफेसर निओनेटोलॉजी भारती यूनिवर्सिटी पुणे, डॉ. प्रदीप सूर्यवंशी ने बताया कि इतने कम कम दिन के बच्चे का शारीरिक सर्वांगीण विकास पूरा हुआ नहीं होता है। शिशु के फेफड़े , दिल, पेट की आतें , लीवर, किडनी, दिमाग, आंखें, त्वचा आदि सभी अवयव अपरिपक्व, कमजोर एवं नाजुक होते हैं और इलाज के दौरान काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। बेहतरीन इलाज़ के बावजूद भी केवल 0.5 प्रतिशत शिशु ही मस्तिष्क क्षति के बिना जीवित रहते है।

डॉ अजय गंभीर, पूर्व नेशनल प्रेजिडेंट राष्ट्रीय नवजात स्वास्थ्य संघटन ने कहा कि हम सीता और उसके परिवार

का आभार व्यक्त करते हैं और सराहना करते है कि उन्होंने पूरी मानवता के सामने नया उदाहरण पेश किया। जहां पर राजस्थान में आज भी लड़कियों को बोझ समझा जाता है, कूड़े में फेंक दिया जाता है या अनाथाश्रम में छोड़ दिया जाता है वहां दम्पती ने ऐसे बच्ची का पूरा इलाज कराया जिसके बचने की संभावना नहीं के बराबर थी और आज वही बच्ची पूरी तरह से स्वस्थ है और अपने घर जा रही है ।

डॉ. एस के टाक ने बताया की आजकल नवीनतम अत्याधुनिक तकनीक, अनुभवी नवजात शिशु विशेषज्ञ डॉक्टर्स व प्रशिक्षित नर्सिंग स्टाफ की टीम से 500 से 600 ग्राम के प्री-मैचुअर शिशु का बचना भी सम्भव हो चुका है। जीवन्ता हॉस्पिटल ने पिछले 3 साल में कई 6 मासी गर्भावस्था एव 500 से 600 ग्राम के बच्चों का सफल उपचार किया है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर – 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल – 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।